

स्वप्नप्रकाशिका ।

पाठकज्ञातीयमाथुर--श्रीकृष्णलाल-
तनयदत्तरामेण संकलिता स्व-
कृतभाषाटीकाविभूषिता
सश्लाघिता च ।

सेयं

श्रीकृष्णदासात्मज--गंगाविष्णोः
अध्यक्ष "लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" मुद्रणालये
मैनेजर पं० शिवदुलारे वाजपेयी इत्यनेन स्वाम्यर्थं
मुद्रिता प्रकाशिता च ।

कल्याण--मुंबई.

संवत् १९७७, शके १८४२.



॥ श्रीः ॥

स्वप्नप्रकाशिका।

पाठकज्ञातीयमाथुर-श्रीकृष्णलाल-
तनयदत्तरामेण संकलिता स्व-
कृतभाषाटीकाविभूषिता
सशोधिता च।

सेयं
श्रीकृष्णदासात्मज-गंगाविष्णोः
अध्यक्ष "लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" मुद्रणालये
मैनेजर पं० शिवदुलारे वाजपेयी इत्यनेन स्वाम्यर्थं
मुद्रिता प्रकाशिता च।

कल्याण-मुंबई.

संवत् १९७७, शके १८४२.

अथ

स्वप्नप्रकाशिकास्य–

विषयानुक्रमणिका।

इति अनुक्रमणिका समाप्ता।

श्रीः ।

श्रीशं वन्दे ।

श्रीनिकुञ्जविहारिणे नमः ।

अथ स्वप्नप्रकाशिकाप्रारम्भः ।

स्वप्नाधिपं हरिं नत्वा स्वप्नविज्ञानहेतवे । स्वप्नप्रकाशिकां वक्ष्ये सर्वचित्तानुगामिनीम् ॥ १ ॥

अर्थ-स्वप्नाधिप श्रीहरिको नमस्कार कर स्वप्नविज्ञानके लिये सबके चित्तमें गमन करनेवाली अर्थात् सबको प्रिय ऐसी स्वप्नप्रकाशिकाको कहते हैं ॥ १ ॥

स्वप्नानतः प्रवक्ष्यामि मरणाय शुभाय च । सुहृदो यांश्च पश्यन्ति व्याधितो वा स्वयं तथा ॥ २ ॥

अर्थ-अब मैं स्वप्नोंको कहूंगा जिनको मरणके अर्थ अथवा अच्छा होनेके अर्थ रोगीके सुहृद् अथवा स्वय रोगी देखता है ॥२॥

सप्तविधस्वप्नाः ।

दृष्टः श्रुतोऽनुभूतश्च प्रार्थितः कल्पितस्तथा । भाविको दोषजश्चैव स्वप्नः सप्तविधो विदुः ॥ ३ ॥

अर्थ-तहां कहते हैं कि स्वप्न सात प्रकारका है । १ दृष्ट (जो दिनमें देखा हो उसीको रात्रिको स्वप्नमें देखे) २ श्रुत (जो बात सुनी हो उसीको स्वप्नमें देखे) ३ अनुभूत (जो बात जाग्रत् अवस्थामें अनुभव करी हो उन्हींको स्वप्नमें देखे) ४ प्रार्थित (जो वस्तुको जाग्रत्अवस्थामें इच्छा कीहो उसीको स्वप्नमें देखना) ५ कल्पित (जो दिनमें किसी वस्तुकी कल्पना करे उसे स्वप्नमें देखे) ६ भाविक

(जो दृष्टान्तसे विलक्षण देखे और उसको उसका वैसाही फल हो उसको भाविक जानना) ७ दोषज (वात पित्त कफ इनकी प्रकृतिके अनुसार स्वप्न दीखना) ॥ ३ ॥

तत्र पञ्चविधं पूर्वमफलं भिषगादिशेत् । दिवास्वप्नमतिह्रस्वमतिदीर्घं च बुद्धिमान् ॥ ४ ॥
दृष्टः प्रथमरात्रे यः स्वप्नः सोऽल्पफलो भवेत् ।
न स्वप्याद्यं पुनर्दृष्ट्वा स सद्यः स्यान्महाफलः॥५॥

अर्थ-तिन दृष्टादिक सात स्वप्नोंमें प्रथमके पांच स्वप्नोंको वैद्य निष्फल कहे । तथा दिनका स्वप्न एवं अति छोटा अथवा अत्यंत बडा स्वप्नकोभी वैद्य निष्फल जाने और जो स्वप्न प्रथम रात्रीमें देखा हो वह अल्प फलको देता है जिस स्वप्नको देखकर फिर न सोवे वह स्वप्न शीघ्र महाफलको देता है ॥ ४ ॥ ५ ॥

वाग्भट लिखते हैं कि जो प्रकृतिसंबंधि स्वप्न अर्थात् जैसे दोषकी प्रकृति हो उसी प्रकारका स्वप्न देखा हुआभी निष्फल है जैसे वातप्रकृतिवाला वातप्रकृतिके अनुरूप स्वप्न देखे । पित्तप्रकृतिवाला पित्तप्रकृतिके और कफप्रकृति कफप्रकृतिके एवं द्वंद्वज और त्रिदोषज जो द्वंद्वजके और त्रिदोषज प्रकृतिके अनुरूप स्वप्न देखे तो निष्फल है और जिस स्वप्नको देखा उसकी विस्मृति हो जावे वहभी निष्फल है शेष समान है ।

मनोवहानां पूर्णत्वाद्दोषैरतिबलैस्त्रिभिः । स्रोतसां दारुणान् स्वप्नान् काले पश्यत्यदारुणान् ॥६॥

१ तेष्वाद्या निष्फलाः पञ्च यथास्वप्रकृतिर्दिवा । विस्मृतो दीर्घह्रस्वोऽपि पूर्वरात्रे चिरात्फलम् ॥ दृष्टः करोति तुच्छं च गोसर्गे तदहर्महत् । निद्रया चानुपहतः प्रतीपैर्वचनैस्तथा ॥

अर्थ-मनोवह अर्थात् मनके बहनेवाली नाडियोंके छिद्र जिस समय अतिबली तीनों दोषोंमें पूर्ण हो जाते हैं उस कालमें यह मनुष्य दारुण (खोटे) और अदारुण (शुभ) स्वप्नोंको देखता है ॥ ६ ॥

नातिप्रसुप्तः पुरुषः सफलानफलानपि । इन्द्रियेशेन मनसा स्वप्नान् पश्यत्यनेकधा ॥ ७ ॥

अर्थ-जिस समय यह पुरुष न अत्यंत सोता हो और न जागता हो उस समय इन्द्रियोंके अधिपति मन करके सुफल और निष्फल अनेक प्रकारके स्वप्नोंको देखता है । जिसमें स्वप्न देखता है उस अवस्थाको स्वप्नावस्था कहते हैं ॥ ७ ॥

तथाच ग्रन्थान्तरे ।

सर्वेन्द्रियाण्युपरतौ मनो ह्युपरतं तथा । विषयेभ्यस्तदा स्वप्नं नानारूपं प्रपश्यति ॥ ८ ॥

अर्थ-और ग्रंथान्तरमेंभी लिखा है कि जिस समय संपूर्ण इन्द्री और मन विषयोंसे उपरामको प्राप्त होते हैं, तब यह प्राणी अनेक प्रकारके भले बुरे स्वप्नोंको देखता है ॥ ८ ॥

तत्रादौ रोगप्राप्तिस्वप्नाः ।

श्वभिरुष्ट्रैः खरैर्वापि याति यो दक्षिणां दिशम् । स्वप्ने यक्ष्मा तमाविश्य न जीवन्तं विमुञ्चते ॥ ९ ॥

अर्थ-तहां प्रथम रोग होनहार स्वप्नोंको कहते हैं । जो मनुष्य स्वप्नमें कुत्ता, ऊंट और गधेपर चढके दक्षिणदिशाको जाता है; उसके राजयक्ष्माको रोग होय सकता है ॥ ९ ॥

रक्तपित्तसंभवे ।

लाक्षारक्ताम्बराभं यः पश्यत्यम्बरमन्तिकात् ।

स रक्तपित्तमासाद्य तेनैवान्ताय नीयते ॥ १० ॥

अर्थ-जो मनुष्य स्वप्नमें लाख और लाल वस्त्रके समान आकाशको देखता है वह रक्तपित्तरोगको प्राप्त हो और उसी रक्तपित्तसे मरणको प्राप्त होता है ॥ १० ॥

रक्तरोग ।

रक्तस्रग्रक्तसर्वाङ्गो रक्तवासा मुहुर्हसन् । यः स्वप्ने ह्रियते नार्या स रक्तं प्राप्य सीदति ॥ ११ ॥

अर्थ-जो मनुष्य स्वप्नमें लाल फूलमाला और अपने संपूर्ण अंगोंको लाल और लाल वस्त्रोंका धारण करता वारंवार हँसता है, एवं जिसको स्वप्नमे लाल वस्त्र धारण करनेवाली स्त्री खींचती है वह रुधिरके रोगसे मरता है ॥ ११ ॥

गुल्मरोग ।

शूलाटोपान्त्रकूटाश्च दौर्बल्यं चातिमात्रया । नखादिषु च वैवर्ण्यं गुल्मेनान्तकरो नरः ॥ १२ ॥

अर्थ-जिस मनुष्यके स्वप्नमें शूलरोग, अफरा, आंतोंका रोग, अत्यन्त दुर्बलताका रोग और जिसके नख दुष्ट रंगके हो जाय उस मनुष्यकी मृत्यु गुल्मरोगसे होती है ॥ १२ ॥

लताकण्टकिनी यस्य दारुणा हृदि जायते । स्वप्ने गुल्मस्तमन्ताय क्रूरो विशति मानवम् १३ ॥

अर्थ-जिस स्वप्नमें मनुष्यके हृदयमें घोर कांटेवाली लता (वेल) उत्पन्न होय उस मनुष्यके मारनेको क्रूर गुल्मरोग उसकी देहमें प्रवेश करता है ॥ १३ ॥

कायेऽल्पमपि संस्पृष्टं सुभृशं यस्य दीर्यते । क्षतानि च नरो हन्ति कुष्ठैर्मृत्युर्हिनस्ति तम् १४

नग्नस्याज्यावसिक्तस्य जुह्वतोऽग्निमनर्चिषम् ।
पद्मान्युरसि जायन्ते स्वप्ने कुष्ठैर्मरिष्यतः ॥ १५ ॥

अर्थ-जिसकी देह नेक्भी स्पर्श करनेसे फंसजावे और घाव हो जावे वह मनुष्य कुष्ठकरके मरण पाता है। यह जाग्रत् अवस्थामें जानना और यही मनुष्य स्वप्नमें नग्न हो घृतको देहमें लगावे और ज्वालारहित अग्निमें हवन करे तथा उसके हृदयमें कमल प्रगट होय वह कुष्ठ करके मरेगा ऐसा जानना ॥ १४ ॥ १५ ॥

प्रमेहरोगे।

स्नातानुलिप्तगात्रेऽपि यस्मिन् गृध्यन्ति मक्षिकाः।
स प्रमेहेण संस्पर्शं प्राप्य तेनैव हन्यते ॥ १६ ॥
स्नेहं बहुविधं स्वप्ने चांडालैः सह यः पिबन् ।
बध्यते स प्रमेहेण स्पृश्यतेऽन्ताय माधवः ॥ १७ ॥

अर्थ-जो मनुष्य स्नान कर चुका हो और तैल आदिका मालिस करचुकाहो तथापि उसकी देहमें मक्खी आकर बैठे, वह मनुष्य प्रमेहरोगको प्राप्त हो और उसी प्रमेहरोगकरके मारा जाता है यह जाग्रत् अवस्थामें जानना। अब कहते हैं कि वही मनुष्य स्वप्नमें चाडाल (भंगी डोम आदि) के साथ अनेक प्रकारके घृततैलादि स्नेहका पान करता है वह प्रमेह करके मरता है उसको मधुप्रमेह होता है ॥ १६ ॥ १७ ॥

ध्यानायामौ तथोद्वेगश्चोहश्च स्थानसम्भवः ।
अरतिर्बलहानिश्च मृत्युरुन्मादपूर्वकः ॥ १८ ॥
आहारे द्वेषिणं पश्यन् लुप्तचित्तं मुदार्दितम् ।
विद्याद्धीमो मुमूर्षुं तमुन्मादेनातिपातिनः ।

रोग होनेवाला मनुष्य स्वप्नमें तिल मिली पूरी खावे और श्वास रोग तथा व्यामोहवाला नाचे नृत्य करता है । पांडुरोग होनेवाला हलदी मिले पदार्थ खाता है । और जो रक्तपित्ती स्वप्नमें रुधिर पीता है सो अवश्य मरण पावे ॥ २५ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥

एतानि पूर्वरूपाणि यः सम्यगवबुध्यते ।
स एषामनुबंधं च फलं च ज्ञातुमर्हति ॥ २८ ॥
इमांश्चाप्यपरान्स्वप्नान् दारुणानुपलक्षयेत् ।
व्याधितानां विनाशाय क्लेशाय महतेऽपि वा॥२९॥

अर्थ–जो पुरुष इन रोगोंके पूर्वरूपोंको उत्तम रीतिसे जानता है वह इन दुष्ट पूर्वरूपोंका फल और इनके परिणामको भी जानता है इस प्रकार यह मनुष्य इनको और अन्य दुष्ट स्वप्नोंको रोगोंके मृत्युके अर्थ अथवा घोर पीड़ाके लिये देखता है ॥ २८ ॥ २९ ॥

अथान्याशुभस्वप्नाः ।

यस्योत्तमाङ्गे जायन्ते वंशगुल्मलतादयः ।
वयांसि च विलीयन्ते स्वप्ने मौण्ड्यमियाच्च
यः ॥ ३० गृध्रोलूकश्वकाकाद्यैः स्वप्ने यः
परिवार्यते ॥ ३१ ॥

अर्थ–अब अन्य अशुभ स्वप्नोंको कहते हैं । जैसे कि जिसके मस्तकपर बांसका वृक्ष, गुल्म (छोटा जमीनके सदृश वृक्ष) और लता प्रगट हो और जिसके देहमें पक्षी प्रवेश करे, तथा स्वप्नमें मुंडित होकर गमन करे और जिसको गीध उल्लू कुत्ता और कौआ आदि त्रास देवें ॥ ३० ॥ ३१ ॥

रक्षःप्रेतपिशाचस्त्रीचाण्डालद्रमडादिकैः।
वंशवेत्रलतापाशतृणकण्टकसङ्कटे ॥ ३२ ॥
प्रमुह्यन्ति हि यः स्वप्ने लगति प्रपतत्यपि
भूमौ पांसूप्रधानायां वल्मीके वाथ भस्मनि॥३३॥
श्मशानायतनश्वभ्रे स्वप्ने यः प्रपतत्यपि।
कलुषेऽम्भसि पङ्के वा कूपे वा तमसावृते।
स्वप्ने मज्जति शीघ्रेण स्रोतसा ह्रियते च यः॥३४॥

अर्थ—जो मनुष्य स्वप्नमे राक्षस, प्रेत, पिशाच, स्त्री, चांडाल द्रमडादिकोंकरके वास, वेत, लता, फास, तिनका और कांटेके संकटमें मोहित हो लगकर गिर पडे, तथा रेतली पृथ्वीमे तथा सर्पकी बांबीमे, राखमे, स्मशानमें, देवस्थानोमें, गड्ढेमें, दुष्ट जलमें, कीचमें अधोए कूएमे गिरे और पानीके वेगकरके जो हरण करा जाय अर्थात् वह जावे ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥

स्नेहपानं तथाभ्यङ्गप्रच्छर्दनविरेचने।
हिरण्यलाभः कलहः स्वप्ने बन्धपराजयौ ॥ ३५ ॥
उपानद्युगनाशश्च प्रपातः पांसुचर्मणोः।
हर्षस्वप्ने प्रकुपितैः पितृभिश्चावभर्त्सनम् ॥ ३६ ॥
दन्तचन्द्रार्कनक्षत्रदेवतादीपचक्षुषाम्।
पतनं वा विनाशो वा स्वप्ने भेदो नगस्य वा॥३७॥

अर्थ—स्वप्नमें तेलका पीना तथा देहमें लगाना, उलटी करना, दस्त होना, तथा सुवर्णका मिलना, कलह होना, बंधनमें पडना और हारना, जोडियोंका नाश, पांसू और चमडेका गिरना तथा स्वप्नमें सुखी होना और कुपित हुए पित्रीश्वरोंकरके

पुरुष देखे तो संशयको प्राप्त हो, ऐसे दुःस्वप्नोंसे कोईभी पुण्यवान् पुरुष बचता है ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४१ ॥

तथा च सुश्रुते ।

स्नेहाभ्यक्तशरीरस्तु करभव्यालगर्दभैः ।
वराहैर्महिषैर्वापि यो यायाद्दक्षिणामुखः ॥ ४३ ॥
रक्ताम्बरधरा कृष्णा हसन्ती मुक्तमूर्धजा ।
यं वा कर्षति बद्ध्वा स्त्री नृत्यन्ती दक्षिणामुखम् ४४
अन्त्यावसायिभिर्यो वा कृष्यते दक्षिणामुखः ।
परिष्वजेरन् यं वापि प्रेताः प्रव्रजितास्तथा ॥४५॥

अर्थ-अब सुश्रुतके मतसे दुष्ट स्वप्न कहते हैं जैसे कि देहमें तेलका लगाना, तथा ऊंट, सर्प, गधा, सूकर और भैंसा इनपर बैठकर जो दक्षिणदिशाको जाय तथा लाल वस्त्रके धारण करनेवाली, बाल जिसके खुले रहे ऐसी स्त्री हँसती नाचती जिस मनुष्यको बांधकर दक्षिणदिशाको घसीटे अथवा जो चांडालोंकरके दक्षिणदिशाको घसीटा जावे अथवा जिसको मृतपुरुष और संन्यासी आलिंगन करे ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥

मूर्द्धन्याघ्रायते यस्तु श्वापदैर्विकृताननैः ।
पिबेन्मधु च तैलं च यो वा पङ्केऽवसीदति ॥४६॥
पङ्कप्रदिग्धगात्रो वा प्रनृत्येत्प्रहसेत्तथा ।
निरम्बरश्च यो रक्तां धारयेच्छिरसि स्रजम् ॥ ४७ ॥

अर्थ-स्वप्नमें जिसके मस्तकको विकराल मुखके कुत्ते सूंघे, जो सहत तेल पीवे, अथवा कीचमें डूब जावे, अथवा जिसके संपूर्ण अंगोंमें कीच लग जावे, नाचे, हंसे, तथा नग्न हो मस्तकपर लाल-पुष्पकी माला धारण करे ॥ ४६ ॥ ४७ ॥

यस्य वंशो नलो वापि तालो वोरसि जायते ॥४८॥
यं वा मत्स्यो ग्रसेद्यो वा जननीं प्रविशेन्नरः।
पर्वताग्रात्पतेद्यो वा श्वभ्रे वा तमसावृते ॥ ४९ ॥
ह्रियते स्रोतसा यो वा यो वा मौण्ड्यमवाप्नुयात्।
पराजीयेत वध्येत काकाद्यैर्वाऽभिभूयते ॥ ५० ॥

अर्थ–स्वप्नमें जिसकी छातीमें बांसका नरसलका अथवा ताडका वृक्ष उत्पन्न हो, तथा जिसको मछली निगल जावे, अथवा अपनी मातामें प्रवेश कर जावे, पर्वतके अग्रभागसे अंधकारयुक्त गड्ढेमें गिरे, अथवा पानीके वेगसे वह जावे वा मुंडन हो, तथा शत्रुसे पराजित हो वा बंधनको प्राप्त हो, एवं जो काक (चील, गीध, घूघू) आदिसे पीडित होवे ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥

यः पश्येद्देवतानां वा प्रकम्पमवनेस्तथा। शाल्मलीकिंशुकं यूपं वल्मीकं पारिभद्रकम् ॥ ५१ ॥ पुष्पाढ्यं कोविदारं वा चितां यो वाधिरोहति ॥ कार्पासतैलपिण्याकलोहानि लवणं तिलान् ॥ ५२ ॥ लभेताश्नाति वा पक्कमन्नं यश्च पिबेत्सुराम्। स्वस्थः स लभते व्याधिं व्याधितो मृत्युमृच्छति ॥ ५३ ॥

र्थ–जो मनुष्य स्वप्नमें देवप्रतिमाको और पृथ्वीको हिलती देखे, तथा सेमरका वृक्ष, ढाकका वृक्ष, यूप (यज्ञमें पशु ... नेका स्तंभ), वमई, नीमका वृक्ष और फूला हुआ कचनारका वृक्ष इनको देखे अथवा अपनेको चितामें बैठा देखे, कपास,

तेल, खल, लोहेके पदार्थ, नोन, तिल ये प्राप्त होंय अथवा पक्व अन्न (पूडी, कचोडी, लड्डू आदि) को स्वप्नमें भक्षण करे, दारू पीवे इत्यादि स्वप्नोंसे स्वस्थ पुरुष रोगी हो और रोगी पुरुषकी मृत्यु होय ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥

विष्णुपुराणे ।

देवद्विजादिभूपानां प्रजानां क्रोध एव च । आ-
लिङ्गनं कुमारीणां प्राणिनां चैव मैथुनम् ॥५४॥
हानिश्चैव स्वगात्राणां वीरकण्ठमनःप्रियान् ।
दक्षिणाशाभिगमनं व्याधिनोभिभवस्तथा ५५॥
फलापहारश्च तथा शाड्लानां विशोधनम् ।
काषायवस्त्रधारित्वं तद्वत्क्रीडनकं तथा ॥५६॥
स्नेहपानावगाहौ च रक्तं माल्यानुलेपनम् ।
एवमादीनि चान्यानि दुःस्वप्नानि विनिर्दिशेत्५७॥

अर्थ–विष्णुपुराणमें लिखा है कि स्वप्नमें देव ब्राह्मण आदिका, राजाका और प्रजाका क्रोधित होना, कुमारी (कन्याओं) का आलिंगन करना, पशु आदिप्राणियोंकामैथुन देखना, अपने देहकी हानि, वीर, कंठ और मनवांछित पदार्थोंका नाश देखना, अपनेको दक्षिणदिशामें जाता हुआ देखे, तथा रोगने आक्रान्त देखे, फलोंका हरण, घासका काटना, तथा गेरुआ कपडे पहने, इसी प्रकार अपनेको खेलता खेलता, तेल पीता, तेलमें स्नान करता, लाल पुष्प-माला और लाल चंदन धारण करे हुए देखना, इनसे आदि ले और बहुतसे दुःस्वप्न जानने चाहियें ॥ ५४ ॥ ५५ ॥५६॥५७॥

वराहः ।

हरिणारोहे भ्रमणं मृत्युर्न चिरेण सूकरारोहे ।
उष्ट्रारोहे व्याधिर्वृद्धिः स्यात्कुञ्जरारोहे ॥ ५८ ॥

अर्थ–वराहमिहिर लिखते हैं कि स्वप्नमें हरिणके ऊपर अपनेको बैठा देखे तो भ्रमण करे, शूकरके ऊपर बैठा देखे तो थोडेही कालमें मृत्यु हो, उसी प्रकार ऊटपै बैठनेसे रोग और हाथीपर बैठनेसे कुटुंबवृद्धि होय ॥ ५८ ॥

मार्कंडेयः ।

वान्त्यामूत्रपुरीषं तु सुवर्णं रजतं तथा । प्रत्यक्ष-
मथवा स्वप्ने जीवेत दशमासिकम् ॥ ५९ ॥
लोहदण्डयुतं कृष्णं नरं कृष्णपरिच्छदम् । स्व-
प्ने च पार्श्वतो दृष्ट्वा त्रिरात्रान्मृत्युमादिशेत् ॥ ६० ॥

अर्थ–मार्कंडेय ऋषि लिखते हैं कि जो मल, मूत्र, सुवर्ण और चांदीकी वमनको जागते अथवा स्वप्नमें देखे वह मनुष्य दश महीने जीवे । जो मनुष्य स्वप्नमें लोहदंडका धारण करनेवाला और संपूर्ण परिच्छद (हाथी घोडा आदि), जिसके काले हो पुरुषको अपने पास खडा देखे वह तीन रात्रिमें मरेगा ऐसा जानना ॥५९॥६०॥

करालैर्विकटैः कृष्णैः पुरुषैरुद्यतायुधैः । पाषा-
णैस्ताड्यते स्वप्ने सद्यो मृत्युर्भवेन्नरः ॥ ६१ ॥

अर्थ–जो स्वप्नमें कराल, विकट, काले पुरुष, हाथमें शस्त्र ले रक्खे हो तथ पत्थर मारते हो ऐसा देखे वह शीघ्र मरे ॥ ६१ ॥

रक्तकृष्णाम्बरधरा गायन्ती च हसन्ती च ।
दक्षिणाशां नयेन्नारी स्वप्ने सोऽपि न जीवति ॥६२॥

अर्थ-लाल अथवा काले वस्त्रको धारण करनेवाली स्त्री गाती हँसती जिसको स्वप्नमें दक्षिणदिशाको ले जावे वह मनुष्य नहीं जीवे ॥ ६२ ॥

यस्तु प्रावरणं शुक्लं स्वप्ने पश्यति मानवः ।
कृष्णरक्तमपि स्वप्ने तस्य मृत्युरुपस्थितः ॥ ६३ ॥

अर्थ-जो मनुष्य स्वप्नमें अपने ओढने विछोनेके वस्त्रोंको सपेद वा काले और लाल देखे उसकी मृत्यु उपस्थित है ऐसा जानना॥६३॥

श्वभ्रे यो निपतेत्स्वप्ने द्वारं चास्य पिधीयते ।
न चोत्तिष्ठति यस्तस्मात्तदन्तं तस्य जीवितम्॥६४॥

अर्थ-जो मनुष्य स्वप्नमे गड्डेमें गिर पडे, जिसके घरके किवाड रुक जावे वह पुरुष जबतक शय्यासे नहीं उठे तबतकही उसका जीवन है ऐसा जानना ॥ ६४ ॥

रक्तगन्धप्रलिप्ताङ्गो रक्तमाल्योपशोभितः ।
तैलाभ्यक्तोऽतिपीतश्च मुण्डितो रक्तवस्त्रधृक्॥६५॥
खरमारुह्य वेगेन दक्षिणां दिशमाव्रजेत् ।
स्वात्मा च दृश्यते स्वप्ने स याति यममन्दिरम्॥६६॥

अर्थ-रक्तगंध और लाल फूल माला जिसने पहिर रक्खी हो तथा तेलको लगावे तथा पीवे, मुंडित हो लाल वस्त्रको धारण कर गदहेके ऊपर बैठ वेगसे दक्षिणदिशामें जाय इस प्रकार जो मनुष्य अपने आपको स्वप्नमें देखे वह अवश्य यमराजके घरको पधारे ॥ ६५ ॥ ६६ ॥

दन्ता यस्य विशीर्यन्ते केशा यस्य पतन्ति च ।
धननाशो भवेत्तस्य व्याधिपीडाप्यसंशयम् ॥६७॥

अर्थ-जिस मनुष्यके स्वप्नमें दांत और बाल गिर.जावें उसका धननाश और व्याधिपीडा होय ॥ ६७ ॥

अभिद्रवन्ति यं स्वप्ने शृङ्गिणो दंष्ट्रिणोऽथवा ।
वानरा वा वराहा वा तस्य राजकुलाद्भयम् ॥ ६८ ॥

अर्थ-स्वप्नमें जिसके पीछे सींगवाले (बैल, भैंसा आदि) और डाढोंवाले (सिंह बघेरा कुत्ता आदि) और बंदर तथा सूअर दोडे। उसको राजकुलसे भय होय ॥ ६८ ॥

स्वप्नेऽभ्यक्तस्तु रजसा तैलेन च घृतेन च ।
स्नेहेन वा तथान्येन व्याधिं तस्य विनिर्दिशेत् ॥ ६९ ॥

अर्थ-जो स्वप्नमें धूल वा तैल तथा घीको देहमें लगाता है एवं और प्रकारका स्नेह (चरबी आदि) को लगाता है वह अवश्य रोगी होय ॥ ६९ ॥

रक्ताम्बरधरा नारी रक्तगन्धानुलेपना ।
अवगूहति यं स्वप्ने तस्य मृत्युं विनिर्दिशेत् ॥ ७० ॥

अर्थ-लाल वस्त्र और लाल चंदनको धारण करनेवाली स्त्री जिस पुरुषका आलिंगन करे उसकी मृत्यु हो ॥ ७० ॥

कृष्णाम्बरधरा नारी कृष्णगन्धानुलेपना ।
अवगूहति यं स्वप्नेऽकल्याणं तस्य निर्दिशेत् ॥ ७१ ॥

अर्थ-काले वस्त्र और काले चंदनको धारण करनेवाली स्त्री जिस पुरुषको आलिंगन करे उसका अकल्याण जानना ॥ ७१ ॥

स्वप्नेषु नग्नान्मुण्डांश्च रक्तकृष्णाम्बरावृतान् ।
व्यंगांश्च विकृतान्कृष्णान्सपाशान्सायुधानपि ॥ ७२ ॥
बध्नतो निघ्नतश्चापि दक्षिणां दिशमाश्रितान् ।

महिषोष्ट्रखरारूढान्स्त्रीपुंसोर्यस्तु पश्यति ।
स स्वस्थो लभते व्याधिं रोगी यात्येव पञ्चताम् ॥

अर्थ-स्वप्नमें नंगे, मुंडित, लाल काले वस्त्रके धारण करनेवाले, अंगहीन, विकराल, काले, फांसी और शस्त्रोंको लिये ऐसे पुरुष बांधते मारते दक्षिणदिशाको ले जाते तथा भैंसा ऊंठ और गधेपर चढे हुए जिस स्त्री पुरुषको दीखे वह नैरोग्य रोगी होय और जो रोगी है वह मृत्यु पावे ॥ ७२ ॥ ७३ ॥

अधोयोनि पतत्युच्चाज्जलेऽग्नौ वा विलीयते ।
श्वापदैर्हन्यते योऽपि मत्स्याद्यैर्गिलितो भवेत् ७४॥
यस्य नेत्रे विलीयेते दीपो निर्वाणतां व्रजेत् ।
तैलं सुरां पिबेद्वापि लोहं वा लभते तिलान्॥७५॥
पक्वान्नं लभतेऽश्नाति विशेत्कूपं रसातलम् ।
स स्वस्थो लभते व्याधिं रोगी यात्येव पञ्चताम् ७६

अर्थ-जो मनुष्य स्वप्नमें अपनेको पर्वत वृक्ष आदि ऊंचे स्थानसे गिरा हुआ देखे तथा पानीमें डूबा हुआ, अग्निमें जला हुआ तथा कुत्तेने नखोंसे घायल करा हुआ मछलीआके भक्षित, अकस्मात् नेत्र जाते रहे, तथा अकस्मात् दीपक बुझा हुआ ऐसा देखे तथा तैल, दारू इनको पीवे, लोह, तिल इनका लाभ होय तथा पक्वान्नका लाभ होकर उसको भोजन करे, तथा कूएमें व पातालमें प्रवेश करे, इस प्रकारके दुष्ट स्वप्न देखनेसे जिसकी प्रकृति स्वस्थ है उसको रोग होय और जो रोगी है वह मरे ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥

दुःस्वप्नानेवमादींश्च दृष्ट्वा ब्रूयान्न कस्यचित् ।
स्नानं कुर्याद्उपस्येव दद्याद्धेमतिलानयः ॥ ७७ ॥

पठेत्स्तोत्राणि देवानां रात्रौ देवालये वसेत् ।
कृत्वैवं त्रिदिनं मर्त्यो दुःस्वप्नात्परिमुच्यते ॥ ७८॥

अर्थ–पूर्वोक्त नग्नमुंडादि दुष्ट स्वप्नको देखकर किसीसे न कहै और प्रातःकाल स्नान कर सुवर्ण और तिलका और लोहका दान करे फिर दुष्ट स्वप्नका नाशकर्त्ता ऐसे देवताओंके (विष्णुसहस्रनामादि) स्तोत्रोंका पाठ करे । इस प्रकार दिनमें कर रात्रिमें देवमन्दिरमें स्थित हो जागरण करे इस प्रकार तीन दिन करनेसे मनुष्य दुःस्वप्नके फलसे छूट जाता है ॥ ७७ ॥ ७८ ॥

ग्रन्थान्तरे च ।

स्तुतिश्च वासुदेवस्य तथा तस्य च पूजनम् ।
नागेन्द्रमोक्षश्रवणं ज्ञेयं दुःस्वप्ननाशनम् ॥ ७९ ॥

अर्थ–औरभी ग्रन्थान्तरोंमें लिखा है कि श्रीवासुदेवकी स्तुति तथा श्रीवासुदेव भगवान्का पूजन और गजेन्द्रमोक्षका श्रवण करनेसे दुःस्वप्नका फल नष्ट होता है ॥ ७९ ॥

पराशरस्मृतौ ।

देवद्विजाग्निप्रतिपूजनानि मन्त्रोपवासादिपवित्रमेव । तिलान्नगोभूमिहिरण्यदानं दुःस्वप्नसंदर्शननाशनानि ॥ ८० ॥ अथाम्बुसंस्पर्शनमन्त्रहोमतिलप्रदानं तपनं च भूयः । शान्तिर्जपो होमस्तथान्नदानं दुःस्वप्नहन्तॄणि पयश्च गाङ्गम् ॥ ८१ ॥

अर्थ–पाराशरस्मृतिमें लिखा है कि देव ब्राह्मण और अग्नि इनका पूजन, गायत्र्यादि दिव्य मंत्रोंका जप करना, उपवासादि पवित्र कर्मोंका अनुष्ठान, तथा तिल, अन्न, गौ, पृथ्वी

और सुवर्णका दान ये सब दुःस्वप्न देखनेके फलको नष्ट करे हैं। इसी प्रकार जलोंका स्पर्श, मंत्रजापपूर्वक होम, तिलदान, तप करना, शांति कराना, जप, होम, अन्नदान और श्रीभागीरथी गंगाके जलका सेवन दुःस्वप्नकी शांति करे है ॥ ८० ॥ ८१ ॥

सुश्रुते च ।

स्वप्नानेवंविधान् दृष्ट्वा प्रातरुत्थाय यत्नवान् ।
दद्यान्माषांस्तिलाँल्लोहं विप्रेभ्यः काञ्चनं तथा ॥ ८२ ॥
जपेच्चापि शुभान्मन्त्रान् गायत्रीं त्रिपदां तथा ।
दृष्ट्वा च प्रथमे यामे सुप्याद्ध्यात्वा पुनःशुभम् ॥८३॥
जपेद्वान्यतमं देवं ब्रह्मचारी समाहितः ।
न चाचक्षीत कस्मैचिद्दृष्ट्वा स्वप्नमशोभनम् ॥८४ ॥
देवतायतने चैव वसेद्रात्रित्रयं तथा ।
विप्रांश्च पूजयेन्नित्यं दुःस्वप्नात्परिमुच्यते ॥ ८५ ॥

अर्थ-सुश्रुतमें लिखा है कि पूर्वोक्त अशुभ स्वप्नको देखे तो प्रातःकाल उठकर यत्नपूर्वक ब्राह्मणोंको उडद, तिल, लोह और सुवर्णका दान करे । तथा शुभवैदिकमंत्रोंको तथा त्रिपदा गायत्री मंत्रका जप करे, यदि रात्रिके प्रथमप्रहरमें स्वप्न देखे तो शुभ वस्तुका स्मरण कर फिर शयन करे अथवा अपनी इच्छाके अनुसार चाहिये जिस देवताका ध्यान करे और ब्रह्मचर्यमें रहना, दुष्ट स्वप्नको किसीके आगे नहीं कहे और देवमंदिरमें तीन रात्रि जागरण करे, नित्य ब्राह्मणोंका पूजन करा करे तो दुःस्वप्नसे छूट जावे ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥

चरके ।

अकल्याणमपि स्वप्नं दृष्ट्वा तत्रैव यः पुनः ।
पश्येत्सौम्यं शुभाकारं तस्य विद्याच्छुभं फलम् ॥८६॥

अर्थ-चरकमें लिखा है कि यदि यह प्राणी दुःस्वप्न देखे और उसीके पिछाडी शुभस्वप्न देखे तो इसका शुभही फल जानना ॥ ८६ ॥

अथ शुभस्वप्नानाह ।

अत ऊर्ध्वं प्रवक्ष्यामि प्रशस्तस्वप्नदर्शनम् ।
देवद्विजान् गोवृषभान् जीवतः सुहृदो नृपान् ॥८७॥
समिद्धमग्निं विप्रांश्च निर्मलानि जलानि च ।
पश्येत्कल्याणलाभाय व्याधेरपगमाय च ॥ ८८ ॥

अर्थ-अब इसके उपरान्त उत्तम स्वप्नदर्शनको कहते हैं । जैसे कि देवता, ब्राह्मण, गौ, बैल, जीवते हुए अपने सुहृद, राजा, देदीप्यमान अग्नि, विप्र और निर्मल जलोंको यह प्राणी कल्याणके लाभार्थ और व्याधिके दूर होनेके लिये देखता है ॥ ८७ ॥ ८८ ॥

मांसं मत्स्यान् स्रजः श्वेता वासांसि च फलानि च ।
लभते धनलाभाय व्याधेरपगमाय च ॥ ८९ ॥

अर्थ-मांस, मछली, श्वेत फूलमाला, श्वेत वस्त्र और फल इनको यह प्राणी स्वप्नमें धनके लाभार्थ और रोगके दूर होनेके लिये देखता है ॥ ८९ ॥

महाप्रासादसफलवृक्षवारणपर्वतान् ।
आरोहेद्द्रव्यलाभाय व्याधेरपगमाय च ॥ ९० ॥

अर्थ-बडा भारी मंदिर, सफल वृक्ष, हाथी और पर्वत इनपर स्वप्नमें यह प्राणी द्रव्यलाभके और रोग दूर होनेके अर्थ चढता ॥ ९० ॥

नदीनदसमुद्रांश्च क्षुभितान् कलुषोदकान्।
तरेत्कल्याणलाभाय व्याधेरपगमाय च ॥९१॥

अर्थ-जो मनुष्य स्वप्नमें बंडे हुए नदी, नद, समुद्र, दूषित जलको तरता है अर्थात् इनके पार जाता है वह कल्याण, लाभ, और रोगमुक्तिके अर्थ है ॥ ९१ ॥

उरगो वा जलौका वा भ्रमरो वापि यं दशेत्।
आरोग्यं निर्दिशेत्तस्य धनलाभं च बुद्धिमान् ९२॥

अर्थ-जिस प्राणीको स्वप्नमें सर्प, जोक, अथवा भौंरा मक्खी काटे उसको आरोग्य और धनका लाभ बुद्धिवान् पुरुष कहे ॥९२॥

एवंरूपान् शुभान्स्वप्नान् यः पश्येद्व्याधितो नरः॥
स दीर्घायुरिति ज्ञेयस्तस्मै कर्म समाचरेत्॥९३॥

अर्थ-इस प्रकार जो रोगी मनुष्य शुभ स्वप्न देखता है उसकी दीर्घायु जाननी इसकी चिकित्सा वैद्यको करनी चाहिये ॥ ९३ ॥

ग्रहनक्षत्रताराणां चन्द्रमण्डलदर्शनम्।भास्करोदयनं चैव प्रज्वलन्तं हुताशनम् ॥ ९४ ॥ हर्म्येष्वारोहणं चैव प्रासादशिरसोऽपि वा। एवमादीनि संदृष्ट्वा नरः सिद्धिमवाप्नुयात् ॥ ९५ ॥

अर्थ-ग्रह, नक्षत्र, तारागण, चन्द्रमण्डल, सूर्योदय, प्रज्वलित अग्नि, महलके ऊपर चढना, तथा मंदिरके ऊपर चढना इत्यादि अन्य शुभ स्वप्न देखनेसे प्राणीको सिद्धिकी प्राप्ति होती है॥ ९४ ॥ ९५ ॥

स्वप्ने तु मदिरापानं वसामांसस्य भक्षणम् ।
कृमिविष्ठानुलेपं च रुधिरेणाभिषेचनम् ॥ ९६ ॥
भोजनं दधिभक्तस्य श्वेतवस्त्रानुलेपनम् ॥
रत्नान्याभरणादीनि स्वप्ने संदर्शनं शुभम् ॥ ९७ ॥

अर्थ–स्वप्नमें मदिराका पीना, वसा (चरबी) मांसका भक्षण करना, देहमें कृमि पड जावें तथा सर्व अंगमें विष्ठा लगी प्रतीत हो, तथा रुधिरसे स्नान, दही भातका भोजन, सपेद वस्त्र और सपेद चंदनका लगाना, तथा रत्न, भूषण आदिका देखना शुभ है ॥ ९६ ॥ ९७ ॥

देवविप्रद्विजच्छत्रतुपपङ्कजपार्थिवान् । शुक्लपुष्पाम्बरधरां प्रशस्ताभरणाङ्गनाम् ॥ ९८ ॥ वृषभं पर्वतं क्षीरफलवृक्षाधिरोहणम् । दर्पणामिषमाल्याप्तिस्तरणं च महाम्भसाम् । दृष्ट्वा स्वप्नेऽथ लाभः स्याद्रोगमुक्तिश्च जायते ॥ ९९ ॥

अर्थ–देवता, ब्राह्मण, द्विज (त्रिवर्ण), छत्र, तुप, कमल, राजा, सपेद पुष्प और सपेद आभूषणके धारण करनेवाली स्त्री, बैल, पर्वत, दूध, फल जिनमें लग रहे ऐसे वृक्षोंपर, चढना, दर्पण, मांस और माला इनकी प्राप्ति होना, बडे भारी जलाशयके पार होना इत्यादि स्वप्नमें देखनेसे धनकी प्राप्ति हो और रोगसे मुक्ति होती है ॥ ९८ ॥ ९९ ॥

वृद्धयात्रायां वराहः ।

शैलप्रासादनागाश्व वृषभारोहणं हितम् ॥ १०० ॥

१ एक प्रकारकी अच्छी मदिरा होती है उसका स्वप्नमें पीना शुभ है।

चन्द्रतारार्कग्रसनं परिमार्गण एव वा । भूम्यम्बुधीनां ग्रसनं शत्रूणां च वधक्रिया ॥ १०१ ॥ जयो विवाहद्यूतेषु संग्रामेषु तथा जयः । भक्षणं चैव मांसानां मत्स्यानां पयसस्तथा ॥ १०२ ॥ दर्शनं रुधिरस्यापि स्नानं क्षीरस्य पायसम् ॥ १०३ ॥ अत्रैव वेष्टितं भूमौ निर्मलं गगनं तथा । मुखेन दोहनं शस्तं महिषीणां तथा गवाम् ॥ १०४ ॥ सिंहीनां हस्तिनीनां च वडवानां तथैव च । प्रासादो देवविप्रेभ्यो गुरुभ्यश्च तथा शुभः । अम्भसा त्वभिषेकश्च ज्ञेयो राज्यप्रदो हि सः ॥ १०५ ॥

अर्थ–वृद्धयात्राग्रंथमें श्रीवराहमिहिरका वाक्य है जैसे कि स्वप्नमें पर्वत, मंदिर, हाथी, बैल इनपर चढना । चंद्र, तारागण और सूर्यको ग्रसना अथवा स्वप्नमें इनको ढूंढना, पृथ्वी और समुद्रको ग्रसना, शत्रुओंका वध करना, विवाह और जूआ खेलनेमें जीत होना तथा लडाई ॥ कुस्तीमें जीत होना । मांस, मछली और दूधका भक्षण करना, रुधिरका देखना, तथा रुधिरसे स्नान करना, सुरा (दारू) रुधिर, मद्य, दूध आर खीरका भोजन अथवा इन्हीं दूध खीर आदिसे पृथ्वीमें लिप्त जाना, निर्मल आकाशका देखना मुखमें गौ, भैंस, सिंहिनी, हथिनी, घोडी आदिका दूध दुहना । देव, ब्राह्मण और गुरुओंका मंदिर ये सब स्वप्नमें दीखना शुभ है। तथा स्वप्नमें जलसे अभिषेकका देखना राज्यदाता है ॥ १०० ॥ ॥ १०१ ॥ १०२ ॥ १०३ ॥ १०४ ॥ १०५ ॥

राष्ट्रेऽभिषेकश्च तथा छेदनं शिरसोऽपि च ॥
॥ १०६ ॥ मरणं वह्निलाभश्च वह्निदाहो गृहादिषु ।
तथोदकानां तरणं तथा विषमलंघनम् ॥ १०७ ॥
हस्तिनीवडवानां च गवां च प्रसवो गृहे । आरो-
हणं गजेन्द्राणां रोदनं च तथा शुभम् ॥ १०८ ॥

अर्थ–राज्यमें अभिषेक, मस्तकका काटना, मरण, अग्निका मिलना, तथा अग्निसे घरका फूँकना, जलाशयोंका तरण और विषमस्थानें (खाई, गड्ढा) आदिका फादना, हथिनी, घोडी और गौका घरमें ब्याहना (बचा देना), हाथीपर बैठना तथा स्वप्नमें रुदन करना शुभ है ॥ १०६ ॥ १०७ ॥ १०८ ॥

परस्त्रीणां तथा लाभस्तथालिङ्गनमेव च ।
निगडैर्बन्धनं चैव तथा विष्ठानुलेपनम् ॥ १०९ ॥
जीवानां भूमिपालानां सुहृदामपि दर्शनम् ।
शुभान्येतानि प्रोक्तानि राज्यलाभकराणि च ११० ॥

अर्थ–परस्त्रियोंका लाभ होना, तथा परस्त्रियोका आलिंगन करना हाथपैरोंमें बेडीनका बधन तथा विष्ठाका देहमें लेप होना, शुभ, जीव, राजा और सुहृदोंका दर्शन होना ये संपूर्ण स्वप्न शुभ राज्यलाभकारी हैं ॥ १०९ ॥ ११० ॥

आचारमयूखे ।

आरोहणं गोवृषकुंजराणां प्रासादशैलाग्रवनस्पतीनाम् । विष्ठानुलेपो रुदितं मृतं च स्वप्नेष्वगम्यागमनं प्रशस्तम् ॥ १११ ॥

अर्थ–स्वप्नमें गो, बैल, हाथी, मंदिर, पर्वत, वनस्पति

(वृक्ष) इनपर चढना, विष्ठाका लेप होना, रुदन करना, मरा हुआ देखना और अगम्या (बहन बेटी आदि) से गमन करना उत्तम कहा है ॥ १११ ॥

क्षीरिणं फलिनं वृक्षमेकाकी यः प्ररोहति ।
तत्रस्थः स विबुध्येत धनं शीघ्रमवाप्नुयात् ॥ ११२ ॥

अर्थ-दूधवाले फलित वृक्षपर अकेला चढे और उसी जगह यदि जग परे तो शीघ्र धनकी प्राप्ति होवे ॥ ११२ ॥

यस्य श्वेतेन सर्पेण ग्रस्तश्चेद्दक्षिणः करः ।
सहस्रलाभस्तस्य स्यादपूर्णे दशमे दिने ॥ ११३ ॥

अर्थ-जिस प्राणीके स्वप्नमें दहने हाथको श्वेत सर्प काटे उसको दश दिनके भीतर एक सहस्र (१०००) रुपयोका लाभ होय ११३

उरगो वृश्चिको वापि जले ग्रसति यं नरम् ।
विजयं चार्थसिद्धिं च पुत्रं तस्य विनिर्दिशेत् ११४ ॥

अर्थ-जिस प्राणीको स्वप्नमें जलमें सर्प, बिच्छू डसे उसको विजय धनकी और पुत्रकी प्राप्ति कहनी चाहिये ॥ ११४ ॥

प्रासादस्थस्तु यो भुङ्क्ते यो वा तरति सागरम् ।
अपि दासकुले जातः स राजा नियतं भवेत् ११५ ॥

अर्थ-जो स्वप्नमें महलपर बैठकर भोजन करे और जो समुद्रके पार हो जाय वह यदि दासकुलमेंभी उत्पन्न हुआ हो तौभी निश्चय राजा होय ॥ ११५ ॥

यस्तु मध्ये तडागस्य भुङ्क्ते च घृतपायसम् ।
असंडे पुष्करे पत्रे तं विद्यात्पृथिवीपतिम् ॥ ११६ ॥

अर्थ-जो प्राणी स्वप्नमें तालावके वीचमें वैठकर सावत कमलके पत्तेपर घृत और खीरका भोजन करे उसको राजा जानना चाहिये अर्थात् राजा होय ॥ ११६ ॥

बलाकां कुक्कुटीं क्रौंचीं दृष्ट्वा यः प्रतिबुध्यति ।
कुलजां लभते चान्यां भार्यां च प्रियवादिनीम् ११७

अर्थ-जो प्राणी स्वप्नमें वगली, मुरगी, क्रौंची पक्षीको देखकर जगे तो उसको प्रिय बोलनेवाली कुलवान् भार्याकी प्राप्ति होय ॥ ११७ ॥

नागपत्रं लभेत्स्वप्ने कर्पूरमगरुं तथा । चन्दनं
पाण्डुरं पुष्पं तस्य श्रीः सर्वतोमुखी ॥ ११८ ॥

अर्थ-जिस मनुष्यको स्वप्नमें पान, कपूर, अगर, चंदन और पीला फूल मिले उसको धनकी प्राप्ति होय ॥ ११८ ॥

क्षीरं पिबति यः स्वप्ने सफेनं दोहने कृते ।
सोमपानं भवेत्तस्य भोक्ता भोगाननेकशः॥ ११९॥

अर्थ-जो मनुष्य दुहा हुआ झागसहित दूध पीता है, उसको यज्ञके सोमपानकी प्राप्ति हो और अनेक भोगोंको भोगे ॥ ११९ ॥

दधि दृष्ट्वा भवेत्प्रीतिर्गोधूमांश्च धनागमः ।
यवान्यज्ञागमं विद्याल्लाभः सिद्धार्थकानपि॥ १२०॥

अर्थ-स्वप्नमें दही देखनेसे सर्व प्राणियोंको प्रिय होय । गेहूं देखनेसे धनकी प्राप्ति और यव देखनेसे यज्ञका आगम अर्थात् यज्ञ होय और पीली सरसोंके देखनेसे लाभ होय ॥ १२० ॥

रथं गोवृषसंयुक्तमेकाकी यः प्ररोहति । तत्रस्थः
स विबुध्येत धनं शीघ्रमवाप्नुयात् ॥ १२१ ॥

अर्थ-जो मनुष्य स्वप्नमें बैल जुडे हुए रथमें अकेला बैठता और उसी समय नींद खुलजावे तो शीघ्र धनकी प्राप्ति होय ॥ १२१ ॥

दधिलाभे भवेदर्थो घृतलाभे ध्रुवं यशः । घृतं भक्षेद् ध्रुवं क्लेशो यशस्तु दधिभक्षणे ॥१२२॥

अर्थ-स्वप्नमें दहीकी प्राप्ति होनेसे धनकी प्राप्ति हो, घृतके मिलनेसे यश होय और स्वप्नमें घृतके खानेसे क्लेश होय और दही खानेसे यश प्राप्ति होय ॥ १२२ ॥

बृहस्पतिः ।

मानुषस्य तु मांसानि यस्तु स्वप्नेषु भक्षयेत् । अपक्कान्येव सर्वाणि शृणु तस्य तु यत्फलम् ॥१२३ ॥

अर्थ-बृहस्पति लिखते हैं कि जो मनुष्य स्वप्नमें मनुष्यका अपक्व मांसको भक्षण करता है, उसके प्रत्येक अंगके मैं फल कहता हूं तू सुन ॥ १२३ ॥

पादे पंचशतं लाभः सहस्रं बाहुभक्षणे । मस्तकाशनतो राज्यं मंत्रित्वं हृदयाशनात् ॥ १२४ ॥

अर्थ-पैरके मांस खानेसे ५०० रुपयोंकी प्राप्ति हो । एवं भुजाके मांस भक्षणसे १००० हजार रुपयोंकी प्राप्ति, मस्तक भक्षणसे राज्य प्राप्ति और हृदयके मांसको स्वप्नमें खानेसे मंत्री होय ॥ १२४ ॥

उपानहौ ध्वजं चक्रं लब्ध्वा यस्तु विबुध्यते । असिं वा निर्मलं तीक्ष्णमध्वानं तस्य निर्दिशेत् ॥१२५॥

अर्थ-जो मनुष्य स्वप्नमें जूता (जोडी), ध्वजा, चक्र निर्मल और तीक्ष्ण तलवारको प्राप्त होकर और उस समय जग पडे तो उसके मार्ग चलना पडेगा ऐसा जानना ॥ १२५ ॥

नावमारोहयेद्यस्तु नदीं वा विपुलां तरेत् । प्रवासं नियतं तस्य शीघ्रमागमनं पुनः ॥ १२६ ॥

अर्थ–जो मनुष्य स्वप्नमें नौकापर वडी भारी नदीको तरता है । वह अवश्य परदेशको जायगा और उस जगहसे शीघ्र आगमन करे ॥ १२६ ॥

पीताम्बरधरा नारी पीतमाल्यानुलेपना । अवगूहति यं स्वप्ने कल्याणं लभते हि सः ॥ १२७ ॥

अर्थ–जो मनुष्य स्वप्नमें पीले वस्त्र और पीले चंदन तथा पीले फूलमालाको धारण करनेवाली स्त्रीका आलिंगन करना देखे तो वह कल्याणको प्राप्त होता है ॥ १२७ ॥

श्वेताम्बरधरा नारी श्वेतमाल्यानुलेपना । अवगूहति यं स्वप्ने तस्य श्रीः सर्वतोमुखी ॥ १२८ ॥

अर्थ–उसी प्रकार सपेद वस्त्र सपेद चंदन तथा सपेद फूलमालाको धारण करनेवाली स्त्री जिसको स्वप्नमें आलिंगन करे, उसको चारों तरफसे लक्ष्मीकी प्राप्ति होय ॥ १२८ ॥

सर्वाणि शुक्लान्यतिशोभनानि कार्पासभस्मौदनतक्रवर्ज्यम् । सर्वाणि कृष्णान्यतिनिन्दितानि गोहस्तिदेवद्विजवाजिवर्ज्यम् ॥ १२९ ॥

अर्थ–स्वप्नमें कपास, भस्म (राख), भात और छाछको त्यागकर संपूर्ण सपेद वस्तु शुभकारी हैं और गौ, हाथी, देव, ब्राह्मण और घोडा इनको परित्याग कर संपूर्ण कृष्णवस्तु स्वप्नमें दीखना अशुभ है ॥ १२९ ॥

देवा द्विजास्तथा गावः पितरो लिङ्गिनो नृपाः ।
यद्वदन्ति नरं स्वप्ने तत्तथैव भवेद्ध्रुवम् ॥ १२० ॥

अर्थ-देव, ब्राह्मण, गौ, पितर, विरक्तपुरुष और राजा ये स्वप्नमें जो बात कहे वह उसी प्रकार होय इसमें संदेह नहीं ॥ १२० ॥

आसने शयने याने शरीरे वाहनेऽपि वा ।
ज्वलमाने विबुध्येत तस्य श्रीः सर्वतोमुखी ॥ १२१ ॥

अर्थ-जो मनुष्य आसन, शय्यापर, सवारीमें, देहमें और वाहन (घोडा हाथी आदि) में अपनेको पजरता देखे और उसी वक्त जग परे तो उसको चारों तरफसे लक्ष्मीकी प्राप्ति होय ॥ १२१ ॥

वडवां कुक्कुटीं दोलां लब्ध्वा यस्तु विबुध्यते ।
सकामां लभते भार्यां सुभगां प्रियवादिनीम् १२२॥

अर्थ-जो मनुष्य स्वप्नमें घोडी, मुरगी और हिंडोला इनको प्राप्त हो जग परे तो वह सकामा और प्रिय बोलनेवाली ऐसे स्त्रीको प्राप्त होवे ॥ १२२ ॥

निगडैर्वध्यते यस्तु पाशैर्वा वध्यते भृशम् ।
सुपुत्रो जायते तस्य सुप्रतिष्ठां च विन्दति॥ १२३॥

अर्थ-जो मनुष्य स्वप्नमें वेडी और फाँसोसे बँध जावे उसके सुन्दर पुत्र होय और वह उत्तम प्रतिष्ठाको प्राप्त होता है ॥१२३॥

पराशरसंहितायाम् ।

स्वाङ्गप्रज्वलनं परोपशमनं शक्रध्वजालिङ्गकृत्
संयुक्तोऽपि नरैर्वियत्यथ वियत्प्रक्षेपणं दिक्षु च ।
बद्धो वा निगडैर्ग्रसेच्च दहनं नारीक्षितो वाहुना छत्रं
वा द्विरदादिरोहणविधौ दिव्योऽपि च ब्राह्मणः॥ १२४॥

नावमारोहयेद्यस्तु नदीं वा विपुलां तरेत् । प्रवासं नियतं तस्य शीघ्रमागमनं पुनः ॥ १२६ ॥

अर्थ–जो मनुष्य स्वप्नमें नौकापर चढ़ें भारी नदीको तरता है । वह अवश्य परदेशको जायगा और उस जगहसे शीघ्र आगमन करे ॥ १२६ ॥

पीताम्बरधरा नारी पीतमाल्यानुलेपना । अवगूहति यं स्वप्ने कल्याणं लभते हि सः ॥ १२७ ॥

अर्थ–जो मनुष्य स्वप्नमें पीले वस्त्र और पीले चंदन तथा पीले फूलमालको धारण करनेवाली स्त्रीका आलिंगन करना देखे तो वह कल्याणको प्राप्त होता है ॥ १२७ ॥

श्वेताम्बरधरा नारी श्वेतमाल्यानुलेपना । अवगूहति यं स्वप्ने तस्य श्रीः सर्वतोमुखी ॥ १२८ ॥

अर्थ–उसी प्रकार सपेद वस्त्र सपेद चंदन तथा सपेद फूलमालाको धारण करनेवाली स्त्री जिसको स्वप्नमें आलिंगन करे, उसको चारों तरफसे लक्ष्मीकी प्राप्ति होय ॥ १२८ ॥

सर्वाणि शुक्लान्यतिशोभनानि कार्पासभस्मौदनतक्रवर्ज्यम् । सर्वाणि कृष्णान्यतिनिन्दितानि गोहस्तिदेवद्विजवाजिवर्ज्यम् ॥ १२९ ॥

अर्थ–स्वप्नमें कपास, भस्म (राख), भात और छाछको त्यागकर संपूर्ण सपेद वस्तु शुभकारी हैं और गौ, हाथी, देव, ब्राह्मण और घोडा इनको परित्याग कर सपूर्ण कृष्णवस्तु स्वप्नमें दीखना अशुभ है ॥ १२९ ॥

अर्थ-सुंदर सुगंधित सपेद चंदन आदिका लेप और फूलमाला तथा मस्तका धारण करना, ब्राह्मण देवता राजा इनका दर्शन होना तथा आशीर्वाद देना तथा मणि, चांदी, सुवर्ण और कमल आदिके घी, दही, खीरका भोजन इत्यादि स्वप्न देखना शुभ है॥१३७॥

निष्फल स्वप्न ।

यथास्वप्रकृतिस्वप्नो विस्मृतो विहतश्च यः ।
चिन्ताकृतो दिवा दृष्टा भवन्त्यफलदास्तु ते ॥१३८॥

अर्थ-यथा प्रकृतिके अनुसार अर्थात् जैसी जिसकी वातपित्तादिक प्रकृति ऐसा स्वप्न और जो स्वप्न देखा हो उसकी याद भूल गई हो और जो विहत हो अर्थात् प्रथम हुए स्वप्न देखे फिर उसके ... शुभ स्वप्न देखे और जो चिंतवन करा हुआ तथा दिनका ... ये स्वप्न निष्फल हैं ॥ १३८ ॥

तथा च ।

आयुस्तृतीयभागे शेषे पतितः प्रकीर्त्तितः स्वप्नः ।
अतिहासशोककोपोत्साहजुगुप्साभयाद्घृणोत्पन्नः ।
वितथः क्षुधापिपासामूत्रपुरीपोद्भवः स्वप्नः॥१३९॥

अर्थ-अत्यंत वृद्धावस्थाका स्वप्न, अत्यंत हास्य, शोक, कोप, उत्साह निंदा, भय इन कारणोंसे तथा जो भूख, प्यास और मलकी बाधामें स्वप्न दीखे वह निष्फल है ॥ १३९ ॥

प्रकृतिजन्यस्वप्न ।

वाताधिकेऽभ्रे भ्रमतिर्विपश्येत्कृष्णानि वर्णानि प्रचण्डवातम् । पित्ताधिके काञ्चनरत्नमाल्यादिवाकराग्निज्वलनानि पश्येत् ॥ १४० ॥ श्लेष्मा-

अर्थ-पराशरसंहितामें लिखा है कि स्वप्नमें अपने अंगोंको फूंकता देखना, शत्रुको जीतना, बिजलीको छूना, वियत्‌मेंभी वियत्‌का पडना, दिशाओंमें फेंकना, पैरोंमें बेडी परना, अग्निको ग्रसना, भुजाओंसे शत्रुदमन उग्र और हाथीपर बैठना तथा दिव्य ब्राह्मणका दर्शन होना ॥ १३४ ॥

दिनकरशशितारा भक्षणस्पर्शनानि विशरणमपि मूर्ध्नः सप्तपंचत्रिधा वा । वृषभगृहनरेन्द्रश्वेतसिंहाधिरोहाग्रसनमुदधिभूमौ भूमिराज्यप्रदानि १३५॥

अर्थ-सूर्य, चंद्र, तारागणोंका भक्षण करना, मस्तकके सात पाच अथवा तीन टूक होना, बैल, घर, राजा इनका दर्शन, सपेद सिंहासनपर बैठना तथा समुद्र और पृथ्वीको ग्रस लेना इत्यादि स्वप्न पृथ्वीके राज्यदाता हैं ॥ १३५ ॥

विपुलरणविमर्दद्यूतवादैर्जयश्च पशुमृगमनुजानां लब्धिरध्यासनं वा । विवसनपरिलेपोऽगम्यनारीगमो वा स्वमरणशिखिलाभः सस्यसंदर्शनं च १३६

अर्थ-स्वप्नमें बडा भारी रण, जुआ और वादमें जीत होना तथा पशु मृग और मनुष्योंकी प्राप्ति तथा सिंहासनकी प्राप्ति, दिव्यवस्त्रोंका ओर चंदनादिकका पहरना लगाना एव अगम्यास्त्रीसे गमन, अपना मरण देखना, अग्निकी प्राप्ति और हरी हरी घासका देखना ॥ १३६ ॥

सितसुरभिमनोज्ञालेपमाल्याम्बराणां द्विजसुरगुरुराज्ञां दर्शनं ह्याशिषश्च । मणिरजतसुवर्णाम्भोजपात्रेषु भुङ्क्ते घृतदधिपरमान्नं सर्वमेतच्छुभं च ॥ १३७ ॥

स्वप्नदर्शनविधिः।

दुकूलमुक्तामणिभिर्नरेन्द्रः सामंतदैवज्ञपुरोहिताश्च। तद्देवतागारमनुप्रविश्य प्रवेशतस्तत्र दिगीश्वरं च॥ १४५॥ अभ्यर्च्य मंत्रैस्तु पुरोहितस्तु संयम्य तस्यां भुवि संयतात्मा। ब्राह्मीशपूर्वामथ भोगपुष्पं कृत्वोपधानं शिरसि क्षितीशः। तथैकभुग्दक्षिणपार्श्वशायी स्वप्नं परीक्षेत यथोपदेशम्॥ १४६॥

अर्थ-अब स्वप्न देखनेकी विधि कहते हैं कि, राजा वस्त्र मोती, मणिको ले और सामंत (सूबेदार), ज्योतिषी, पुरोहित इनको साथ ले देवताके मंदिरमें जाय और उस जगह पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य तथा वस्त्र रत्नादिकसे मंत्रपाठपूर्वक इष्ट देवका पूजन करे फिर उस राजाका पुरोहित इन्द्रियोंको जीत उसी मंदिरके पूर्वकी ओर अथवा ईशानकी ओर बिस्तर करके और पुष्पोंको तथा सुगंधित वस्तुको अपने सिरानें धरके सोवे उसी प्रकार स्वयं राजा एक वार भोजन करे और दहनी करवट सोवे इस प्रकार यथोपदेश उस मंदिरमें स्वप्नकी परीक्षा करे॥ १४५॥ १४६॥

शयनके समय जपनीय मन्त्र।

नमः शम्भो त्रिनेत्राय रुद्राय वरदाय च। वामनाय विरूपाय स्वप्नाधिपतये नमः॥ १४७॥ भगवन् देवदेवेश शूलभृद्वृषवाहन। इष्टानिष्टे ममाचक्ष्व स्वप्ने सुप्तस्य सन्त्वतः॥ १४८॥

अर्थ-जिस समय मंदिरमें सोवे उस समय "नमः शंभो त्रिनेत्राय" इस मंत्रको जपे इसका यह अर्थ है कि त्रिनेत्र, रुद्र,

धिकश्चन्द्रभशुक्लपुष्पसरित्सरोम्भोनिधिलङ्घनानि । काले मरुत्पित्तकफप्रकोपः साधारणं स्याद्बलसन्निपातात् ॥ १४१ ॥

अर्थ-जिस प्राणीकी वातप्रकृति होती है वह आकाशमें भ्रमण करे तथा काले रंगके पदार्थोंको देखे तथा प्रचंड पवन (आंधी) को देखता है । पित्ताधिकप्रकृतिवाला मनुष्य सुवर्ण और रत्नोंकी माला, सूर्य, अग्नि और प्रकाशवान् पदार्थ (बिजली आदि) को देखे । कफाधिकप्रकृतिवाला मनुष्य चन्द्रमाके तुल्य सफेद पुष्प, सरोवर, नदी, समुद्रको तरना इत्यादि स्वप्न देखे और मिश्रितप्रकृतिवाले मनुष्य मिश्रितस्वप्नको देखते हैं ॥ १४० ॥ १४१ ॥

स्वप्नस्य प्रहरपरत्वेन फलम् ।

स्वप्ने तु प्रथमे यामे संवत्सरविपाकिनः । द्वितीये चाष्टभिर्मासैस्त्रिभिर्मासैस्तृतीयके ॥ १४२ ॥
चतुर्थयामे यः स्वप्नो मासेन फलदः स्मृतः । अरुणोदयवेलायां दशाहेन फलं भवेत् ॥ १४३ ॥
गोविसर्जनवेलायां सद्य एव फलं भवेत् ॥ १४४ ॥

अर्थ-रात्रिके प्रथम प्रहरका देखा हुआ स्वप्न १ वर्षमें फल देता है । दूसरे प्रहरका स्वप्न आठ महीनेमें फल देय । तीसरे प्रहरका स्वप्न तीन महीनेमें और रात्रिके चतुर्थ प्रहरमें देखा हुआ स्वप्न १ महीनेमें अपना शुभाशुभ फल करे । और जो अरुणोदय (प्रातःकाल) में स्वप्न देखा हो वह दश दिनमें फल करे । उसी प्रकार गौ छोडनेके समय देखा हुआ स्वप्न शुभाशुभ फल देता है । परंतु जो मनुष्य जिस समय जागता है उसको उसी समयका देखा हुआ फल देता है ॥ १४२ ॥ १४३ ॥ १४४ ॥

स्वप्नदर्शनविधिः ।

दुकूलमुक्तामणिभिर्नरेन्द्रः सामंतदैवज्ञपुरोहिताश्च । तद्देवतागारमनुप्रविश्य प्रवेशतस्तत्र दिगीश्वरं च ॥ १४५ ॥ अभ्यर्च्य मंत्रस्तु पुरोहितस्तु संयम्य मस्यां भुवि संयतात्मा । प्राक्शीशपूर्वामथ भोगपुष्पं कृत्वोपधानं शिरसि क्षितीशः । तथैकभुग्दक्षिणपार्श्वशायी स्वप्नं परीक्षेत यथोपदेशम् ॥ १४६ ॥

अर्थ-अब स्वप्न देखनेकी विधि कहते हैं कि, राजा वस्त्र मोती, मणिको ले और सामंत (सूबेदार), ज्योतिषी, पुरोहित इनको साथ ले देवताके मंदिरमें जाय और उस जगह पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य तथा वस्त्र रत्नादिकसे मंत्रपाठपूर्वक इष्ट देवका पूजन करे फिर उस राजाका पुरोहित इन्द्रियोंको जीत उसी मंदिरके पूर्वकी ओर, अथवा ईशानकी ओर बिस्तार करके और पुष्पोंको तथा सुगंधित वस्तुको अपने सिराने धरके सोवे उसी प्रकार स्वयं राजा एक बार भोजन करे और दहनी करवट सोवे इस प्रकार यथोपदेश उस मंदिरमें स्वप्नकी परीक्षा करे ॥ १४५ ॥ १४६ ॥

शयनके समय जपनीय मन्त्र ।

नमः शम्भो त्रिनेत्राय रुद्राय वरदाय च । वामनाय विरूपाय स्वप्नाधिपतये नमः ॥ १४७ ॥ भगवन् देवदेवेश शूलभृद्वृषवाहन । इष्टानिष्टे ममाचक्ष्व स्वप्ने सुप्तस्य सन्त्वतः ॥ १४८ ॥

अर्थ-जिस समय मंदिरमें सोवे उस समय "नमः शंभो त्रिनेत्राय" इस मंत्रको जपे इसका यह अर्थ है कि त्रिनेत्र, रुद्र,

वरद, वामन, विरूप स्वप्नाधिपके अर्थ नमस्कार है, हे भगवन् ! हे देवदेवेश ! हे शूलके धारणकर्त्ता ! हे वृषवाहन ! निद्रामें मुझको निरंतर इष्ट और अनिष्ट भवितव्यको कहो ॥ १४७ ॥ १४८ ॥

एकवस्त्रः कुशास्तीर्णे सुप्तः प्रयतमानसः ।
निशान्ते पश्यते स्वप्नं शुभं वा यदि वाऽशुभम् ॥

अर्थ–स्वप्न देखनेकी इच्छावाला पुरुष एक वस्त्रको धारण कर कुशाके आसनपर मनको एकाग्र कर शयन करे इस प्रकार करनेसे उस प्राणीको रात्रीके अंतरमे जैसा कुछ शुभाशुभ भवितव्य हो ऐसा स्वप्न दीखे ॥ १४९ ॥

एतत्पवित्रं परमं पुण्यदं पापनाशनम् ।
यः पठेत्प्रातरुत्थाय दुःस्वप्नं तस्य नश्यति ॥ १५० ॥

अर्थ–परम पवित्र पुण्यदायक और पापनाशक इस स्वप्नप्रकाशिका ग्रंथको प्रातःकाल उठकर जो पाठ करता है उस प्राणीका दुःस्वप्न देखा हुआ नष्ट होकर शुभ फलकी प्राप्ति होती है ॥ १५० ॥

इति श्रीआयुर्वेदोद्धारकमाथुरकृष्णलालात्मजदत्तरामकृतभाषाटीकासहिता स्वप्नप्रकाशिका समाप्ता ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–
गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,
" लक्ष्मीवेंकटेश्वर " छापखाना,
कल्याण–मुंबई.

जाननेके लिये यही एक टीका है कि फिर ज़राभी सन्देह न रहे १-४

बृहत्पाराशरहोराशास्त्र-पूर्वखण्ड सारांश उत्तरखण्ड संस्कृत टीका तथा भाषाटीकासहित दशान्तर्दशा । इसमें-ग्रहोंके पृथक् २ भावफलादेश इत्यादि अपूर्व है ५-०

बृहत्संहिता भा० टी० ग्लेज (पं० बलदेवप्रसादमिश्रकृत भाषाटीकासमेत वराहमिहिराचार्य प्रणीत इसमें नवग्रह अगस्त्य और सप्तऋषियोंके चालका फल सूर्य चंद्र ग्रह धूमकेतुके फल ग्रहयुद्ध ग्रहसमागम ग्रहवर्षफल पानी बरसनेका अनेक विचार दिग्दाह भूमिकम्प उल्का परिवेष इन्द्रधनुष गन्धर्वनगर खंजनदर्शन उत्पातक मयूराचित्र पुष्पस्नान पट्टलक्षण मकान बनानेकी विधि और प्रतिष्ठापन इत्यादि १०८ विषय हैं)

" तथा रफ ४-०

बृहज्जातकसटीक जिल्दका ३-४

" " खुलापत्रा १-८

बृहज्जातकभाषाटीक महीधरकृत ग्लेज १-४

" " " तथा रफ १-०

पुस्तकें मिलनेका ठिकाना—
गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना
कल्याण-मुंबई.